विचार बिन्दु

मनुष्य तो दुर्बलताओं की प्रतिमा है जिसमें देवत्व और दानत्व दोनों का ही समावेश है। –हितोपदेश

मशीन बुद्धि से काम होगा तब मानव मस्तिष्क क्या करेगा!

अब जब मशीन बुद्धि 'एआई' लगातार उच्च स्तर छूती जा रही है, तब यह सवाल भी उठ रहा है कि मनुष्य की बुद्धि, जो मशीनी बुद्धि को नित नये आयाम दे रही है, उसका खुद का क्या होगा? दो साल से भी कम समय में 'ओपन एआई' एक गैर-लाभकारी प्रयोग से निकलकर एक वैश्विक व्यवसाय में तब्दील हो गई है, जिसके बाद और अधिक परिष्कृत एआई तैयार करने वाली बड़ी कंपनियों के बीच अब जबरदस्त प्रतिस्पर्धा छिड़ी हुई है। जीव विज्ञानी बताते हैं कि मानव बुद्धि भी रासायनिक यांत्रिक प्रक्रियाओं वाली कोशिकाओं की मशीन मस्तिष्क से ही तैयार होती है। नई परिस्थितियों में इस चेतन मशीन मस्तिष्क का क्या होगा? एआई का विकास जिस स्तर पर पहुंच गया है, उसमें मशीनी बुद्धि न केवल गणित के कठिन सवाल हल कर सकती है बल्कि बेहतरीन निबंध और फीचर लेख लिख सकती है, चिट्ठियां लिख सकती है, चित्र बना सकती है, मानव स्वर और साजों की आवाजों को बना कर संगीत की रचना कर सकती है। इससे मानव मस्तिष्क को अवश्य ही अवकाश मिलेगा, मगर उसके क्या परिणाम होंगे, यह सवाल भी उठता है। डिजिटल तकनीक को विकसित करने वाले इंसानी दिमाग ने जो अजूबा कर दिखाया है उससे हर वह काम जो मनुष्य कर सकता है मशीन भी अपने को दी गई बुद्धि से कर सकती है, यहां तक कि जीवित मानव शरीर पर शल्य क्रिया भी। इसीलिए अब यह सवाल उठ खड़ा हुआ है कि अगर मशीन, मनुष्य द्वारा किए जाने वाले तमाम काम संभाल सकती है, और उसे लगातार बिना थके कर सकती है, तो फिर इंसान का दिमाग क्या करेगा या उसके करने के लिये क्या बचेगा?

जनरेटिव एआई के उदय के साथ जब कृत्रिम बुद्धि की संभावना सच होती दिखने लगी थी तब आधुनिक इतिहासकार युवल नोआ हरारी ने टिप्पणी की थी कि कंप्यूटर की भाषा ने "हमारी सभ्यता के ऑपरेटिंग सिस्टम को हैक कर लिया है।" इसे जीव विज्ञानियों और स्नायु विज्ञानियों की मस्तिष्क की उस व्याख्या से समझा जा सकता है जिसमें वे कहते हैं कि खुद मानव बुद्धि का अधिकांश हिस्सा यांत्रिक प्रकृति का है, अर्थात पैटर्न-आधारित है, जिसे निर्जीव मशीनें आसानी से दोहरा सकती हैं। डिजिटल एल्गोरिद्म की भाषा के जरिए सूचना प्रौद्योगिकी के लोग मशीन को मानवीय बुद्धि की यंत्र-क्रिया सिखाते हुए जिस ताकतवर एआई के निर्माण तक पहुंच चुके हैं वह सबके सामने है। मनुष्य के मस्तिष्क सहित शरीर की समस्त कोशिकाओं की आपसी संचार व्यवस्था जो शरीर की क्रिया और प्रतिक्रिया को नियंत्रित करती है, उसे मशीन को सिखा कर उससे करवाना ही एआई का विकास है।

एक नया सवाल यह भी पूछा जाने लगा है कि क्या मशीनी बुद्धि के विकास का अगला चरण मशीन को चेतन बना सकेगा? क्या मशीनें कभी सही मायने में खुद सोच पाएंगी, समझ पाएंगी, या शायद सचेत हो पाएंगी? क्या वे तथाकथित "मानव बुद्धि की ऊंचाइयों" तक पहुँच पाएंगी? इसकी पृष्ठभूमि में एक और अस्पष्ट सवाल मंडराता रहता है कि अगर मशीन में चेतना आई तो क्या उसके हमारे खिलाफ हो जाने की नौबत आ सकती है? क्या वे मानव की प्रतिद्वंद्वी प्रजाति बन जाएगी? इस डर ने वर्षों से मानवीय कल्पनाओं को हवा दी है। इस विषय पर अनेकों उपन्यास लिखे गये और दर्जनों फिल्में बनी हैं जो अत्यंत लोकप्रिय तथा बॉक्स ऑफिस पर सफल हुई हैं। इससे आमजन में इस सवाल के जवाब पाने की उत्सुकता और बढ़ गई है कि क्या होगा यदि इस नई दुनिया में, एआई न केवल शब्द, बल्कि विश्वास, मिथक और शायद एक नई तरह की संस्कृति भी बनाना शुरू कर दे जो मानव इतिहास के पाठ्यक्रम को पूरी तरह से बदल सकती हो? मगर अधिकांश दार्शनिकों ने यह कहते हए इस विचार को खारिज कर दिया है कि एआई, मानव दिमाग की नकल और अनुकरण करके एक शानदार प्रदर्शन तो कर सकता है, किन्तु इसका खुद अपना दिमाग नहीं हो सकता है। दार्शनिक स्वेन न्यहोम ने एक दिन, चैटजीपीटी पर टाइप किया, मार्टिन हाइडेगर एआई की नैतिकता के बारे में क्या सोचते होंगे? कंप्यूटर ने तुरंत ही इस विषय पर एक बहुत ही प्रभावशाली लघु निबंध तैयार करके दे दिया। न्यहोम को उसे पढ़ कर स्वीकार करना पड़ा कि चैटजीपीटी ने जो लिख कर दिया है वह संभवतः बहुत से छात्रों की तुलना में बेहतर काम किया है। वर्ष 2023 में प्रकाशित यह किस्सा, कंप्यूटर के बड़े भाषा मॉडल (एलएलएम) के विकास के दौरान बहुत शुरुआती चरण में आया था। अब तो किसी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर द्वारा लिखे गए पेपर और एक एआई द्वारा तैयार किए गए पेपर के बीच अंतर बताना लगभग असंभव लग सकता है। ऐसे में क्या आने वाले समय में मानव मस्तिष्क की हमारी असीम क्षमता कोई महत्व रख पायेगी? कुछ दार्शनिकों ने इस संकट को महसूस करना शुरू भी कर दिया है। इस बारे में गंभीर चर्चाएं भी हो रही हैं कि अगर मशीनें बिना किसी वास्तविक समझ के प्रभावशाली परिणाम देगी तब इंसान का क्या महत्व रह जाएगा? ऐसे दर्शनशास्त्री भी हैं जो मानते हैं कि जब एआई, मानव बुद्धिमत्ता को पूरी तरह से ग्रहण कर लेगा तो हमारा जगत ऐसे निष्क्रिय इंसानों के समाज में बदल जाएगा जो केवल अवकाश और मनोरंजन पर केंद्रित होगा। जब बाजार की ताकतों द्वारा संचालित मशीनें किसी भी डॉक्टर से बेहतर हमारा निदान करेंगी, पुस्तकों का अनुवाद करेंगी, बीथोवेन के मुकाबले सिम्फनी की रचना करेंगी, अभूतपूर्व दर्शन की रचना करेंगी और यहां तक कि हमारे अनुसरण के लिए नए गुरुओं और देवता भी बना देंगी। तब बाज़ार नियंत्रित एआई "छवि निर्माण" करेगी जो हमारी प्रतिक्रियाओं को हमारी दिनचर्या में बदल देगी। यह यांत्रिक बुद्धि अब हर जगह पसार रही है, जो चुपचाप मानव अनुभव से उसकी गहराई को खत्म कर रही है। लगता है कि जैसे-जैसे मशीनी बुद्धि हमारी सोच पर ज़्यादा हावी होती चली जाएगी, हमारा मस्तिष्क आलसी, असंयत और, स्पष्ट रूप से, ऊबाऊ होने का जोखिम उठाने लगेगा। ऐसी दुनिया में जहां काम और संघर्ष अतीत की बातें हो जाएंगी तब हमारे अनुभव मनोरंजन और आनंद की खोज से ज़्यादा कुछ नहीं रह जाएंगे।

यह यांत्रिक बुद्धि अब हर जगह पसार रही है, जो चुपचाप मानव अनुभव से उसकी गहराई को खत्म कर रही है। लगता है कि जैसे-जैसे मशीनी बुद्धि हमारी सोच पर ज़्यादा हावी होती चली जाएगी, हमारा मस्तिष्क आलसी, असंयत और, स्पष्ट रूप से, ऊबाऊ होने का जोखिम उठाने लगेगा।

ऐसा भी कहा जा रहा है कि जब एआई से इंसानों जैसा दिमाग विकसित किया जा रहा है तब इंसान खुद अपना दिमाग मशीन जैसा बना रहा है? हम अपने दिमाग को मशीनों का प्रतिबिंब बनाने का जोखिम उठा रहे हैं, क्योंकि मानव मस्तिष्क और कंप्यूटर के बीच की रेखा दिन-प्रतिदिन धुंधली होती जा रही है। मगर इंसान कल्पना करता है, सोचता है और उसकी सोच, उसे अधिक बुद्धिमान और रचनात्मक बनाती है। सोचना मन की गणना संबंधी आदत होती है। एक ऐसा यांत्रिक चक्र है जो "अनुभव से शुरू होता है, जो स्मृति के रूप में मस्तिष्क की कोशिकाओं में संग्रहीत होकर ज्ञान बन जाता है; फिर स्मृति से, विचार होता है। अनुभव, स्मृति और ज्ञान की यह श्रृंखला, प्रतिक्रिया व पुनरावृत्ति से मजबूत होती है। हम इस आंतरिक भंडार के आधार पर कार्य करते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं, उन क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं से सीखते हैं, और अधिक अनुभव, स्मृति और ज्ञान इकट्ठा करते हैं। हमारा सोचना "स्मृति प्रतिक्रियाएं है, जो एक तरह की आंतरिक प्रोग्रामिंग है और कंप्यूटर के काम करने के तरीके से काफी मिलती-जुलती है। आखिरकार, कंप्यूटर भी तो जानकारी के इंसानी मस्तिष्क जैसे गोदाम होते हैं, जो सीखने और खुद को सुधारने का काम करते हैं। हालांकि वे इस चक्र को बिना सही मायने में 'सोचने' के चलाते हैं। तो क्या हम यह जानकर तसल्ली पा लें कि कम से कम हमारे वास्तविक, भौतिक अनुभव एक-दूसरे से अलग हैं? दलील दी जाती है कि कोई भी अल्ट्रा-स्मार्ट मशीन मानव रूप में नहीं आ सकती क्योंकि वह प्यार में नहीं पड़ सकती, चांद-सितारों को देखकर आहें नहीं भर सकती, न यह कह सकती है कि वाह क्या शानदार रात है! मगर हमारी देहधारी चेतना यह संभव करती है। तब हमारे सामने दो रास्ते होंगे। या तो हम लगातार मनोरंजन के आगे समर्पण कर देंगे या फिर हम उच्चतर चेतना के प्रति जागकर अपने दिमाग को तेज रखने का निर्णय लेंगे। आशावादी लोग सोच सकते हैं कि एआई के जरिए एक बार दिनचर्या से मुक्त होने के बाद मानव मस्तिष्क स्वाभाविक रूप से उच्च लक्ष्यों की ओर बढ़ जाएगा। किन्तु बहुतों को संदेह है कि यांत्रिक विचारों के लिए अनुकूलित मस्तिष्क बिना कुछ गंभीर प्रयास के अचानक तैयार हो जाएगा। इसलिए सलाह दी जा रही है कि हम अपने दिमाग को सक्रिय बनाए रखें और एक ऐसा अभ्यास सतत करें जो हमें मशीनों से अलग करता है, और उन गतिविधियों और क्षमताओं का पता लगाएं जो केवल सोचने से संभव हैं। हमारे दिमाग में और भी बहुत कुछ है जिसे कंप्यूटर कभी नहीं पकड़ सकते हैं। इसीलिए इन तकनीकों के उपयोग के नैतिक मूल्यों पर बात होती है। मशीनी बुद्धि पर गहरी चर्चा करते हुए दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और अस्तित्वगत बदलाव की चिंता की जाती है। मशीन जब इंसानी बुद्धि की और ऊंचाइयां हासिल कर लेगी तब मनुष्य का दिमाग क्या करेगा? इस सवाल का जवाब यही दिया जा सकता है कि उसे जो अवकाश मिलेगा उससे वह चेतना की और उचाईयों को छूने का प्रयास करेगा। एक मानव चित्रकार अपने हर ब्रशस्ट्रोक को गहराई से महसूस करता है जबकि कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर बिना किसी भावना के समान रूप से उत्तेजक कुछ बना सकता है? क्या इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला?

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

प्रवासी दृष्टि: समाज, संस्कृति और सोच

भारतीय समाज में बड़े होने का अभिशाप

डॉ. पंकज राजवंशी

जब भारतीय परिवार में पहला बेटा जन्म लेता है, तो उसके साथ ही एक अदृश्य बड़े होने का अधिकार उसे दे दिया जाता है। यह अधिकार, जिसे समाज और माता-पिता मिलकर पोषित करते हैं, शुरू में जिम्मेदारी के रूप में आता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, यह जिम्मेदारी बड़े होने का अभिशाप बन जाती है–एक ऐसा बोझ, जिसे उठाते हुए बड़े बेटे की व्यक्तिगत इच्छाएं और सपने कहीं खो जाते हैं।

बचपन से ही बड़े बेटे को सिखाया जाता है कि वह घर का सबसे समझदार और जिम्मेदार सदस्य है। माता-पिता और समाज उसे परिवार का नेता बनाते हैं। लेकिन यह नेतृत्व अक्सर बोझिल हो जाता है। छोटे भाई-बहनों की देखभाल, उनके भविष्य के लिए अपने सपनों का त्याग और माता-पिता की उम्मीदों पर खरा उतरने की लगातार कोशिश–यह सब मिलकर उसे न केवल थका देता है, बल्कि उसकी जिंदगी के हर पहलू को नियंत्रित करने लगता है।

माता-पिता बड़े बेटे को परिवार का आधार मानते हैं। तुम बड़े हो, तुम्हें समझना चाहिए, यह वाक्य बार-बार दोहराया जाता है। इससे वह बचपन से ही त्याग और जिम्मेदारी को अपना धर्म समझने लगता है। उसकी पढ़ाई, नौकरी, यहां तक कि जीवनसाथी का चयन भी अक्सर परिवार की जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह त्याग और बलिदान उसकी पहचान बन जाता है।

लेकिन समस्या तब शुरू होती है, जब यह बलिदान बाद में अनदेखा कर दिया जाता है। बड़े बेटे को लगता है कि उसने परिवार के लिए जो कुछ भी किया, उसका सम्मान नहीं हुआ। छोटे भाई-बहन, जो बड़े होने पर अपनी स्वतंत्रता चाहते हैं, उसके निर्देशों को नजरअंदाज करना शुरू कर देते हैं। मैंने तुम्हारे लिए इतना कुछ किया, और अब तुम मेरी बात भी नहीं मान सकते, यह वाक्य उन बड़े भाइयों की आम आवाज बन जाता है, जिन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा परिवार के लिए समर्पित कर दिया।

बड़ा भाई, जिसे बचपन से यह सिखाया गया था कि वह घर का मुखिया है, जब अपने छोटे भाई-बहनों की स्वतंत्रता की मांग को देखता है, तो उसे यह एक विद्रोह जैसा लगता है। वह इसे अपनी भूमिका और बलिदान के अपमान के रूप में लेता है। लेकिन छोटे भाई-बहनों के नजरिए से यह बड़े होने का अधिकार एक अनुचित दबाव और नियंत्रण का प्रतीक है।

माता-पिता भी इस स्थिति को जटिल बना देते हैं। वे बड़े बेटे से यह अपेक्षा करते हैं कि वह हर समस्या का हल निकाले और परिवार को एकजुट रखे। लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि इस भूमिका को निभाने में बड़ा बेटा भी भावनात्मक और मानसिक थकान का अनुभव कर सकता है।

समाज भी इस बड़े होने के अधिकार को और मजबूत करता है। बड़े बेटे को घर का नेता और रक्षक माना जाता है। लेकिन यह अधिकार धीरे-धीरे परिवार पर नियंत्रण की कोशिश में बदल जाता है। यह मैं बड़ा हूं, इसलिए मेरी बात मानो वाला दृष्टिकोण छोटे भाई-बहनों के साथ टकराव का कारण बनता है। अमेरिकी संस्कृति में यह स्थिति अलग है। वहां बड़े और छोटे भाई-बहनों के बीच समानता पर जोर दिया जाता है। बड़े भाई-बहन का रोल मॉडल बनना वहां स्वाभाविक है, लेकिन इसे किसी अधिकार या नियंत्रण के रूप में नहीं देखा जाता। वहां हर व्यक्ति अपने जीवन का मालिक होता है।

भारतीय समाज में यह मॉडल अब आधुनिक समय में विफल हो रहा है। छोटे भाई-बहन अपनी स्वतंत्रता और अधिकार चाहते हैं। वे अपने जीवन के फैसलों में बड़े भाई का हस्तक्षेप नहीं चाहते। लेकिन बड़ा भाई, जिसने परिवार के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया, इसे अपना अपमान मानता है। इस बड़े होने के अधिकार को बदलने की जरूरत है। बड़े भाई को एक प्रेरणा स्त्रोत और सहयोगी बनाना चाहिए, न कि एक प्राधिकारी। माता-पिता को अपनी जिम्मेदारियां समान रूप से बांटनी चाहिए, न कि सब कुछ बड़े बेटे पर डाल देना चाहिए।

अगर बड़े होने के इस अधिकार को सही दिशा में मोड़ा जाए, तो यह परिवार में सम्मान और सामंजस्य का आधार बन सकता है। लेकिन अगर इसे उसी तरह रखा गया, जैसा यह सदियों से है, तो यह रिश्तों में दरारें पैदा करता रहेगा। बड़े होने का अभिशाप तभी समाप्त होगा, जब इसे अधिकार की जगह सम्मान और सहयोग का प्रतीक बनाया जाएगा।

–डॉ. पंकज राजवंशी
सिएटल (अमरीका) में
गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट।

लोयल से भुकाना सीमा तक बनाई गई सड़क डेढ़ महीने में ही क्षतिग्रस्त हुई

डेढ़ किलोमीटर लंबी सड़क 71 लाख रुपये की लागत से बनाई गई थी

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखंड के लोयल गांव में बनाई गई सड़क में अनियमितता को लेकर ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान ग्रामीणों ने बेहतर क्वालिटी से सड़क का निर्माण कार्य करवाने की मांग की है।

विरोध कर रहे ग्रामीणों ने बताया कि लोयल से भुकाना सीमा तक बनाई गई सड़क महज डेढ़ महीने में क्षतिग्रस्त हो गई है, जिस पर ग्रामीणों ने घटिया सामग्री का उपयोग करने का आरोप लगाया है। यह सड़क लगभग 71 लाख रुपये की लागत से बनाई गई थी और डेढ़ किलोमिटर लंबी है। ग्रामीणों में इस सड़क के क्षतिग्रस्त होने से आक्रोश है तथा सड़क निर्माण कार्य की उच्च स्तरीय जांच करवाने और फिर से सड़क का निर्माण करवाने की मांग कर रहे हैं। ग्रामीण विद्याधर काजला, हवलदार रोहिताश काजला ने बताया कि सड़क के निर्माण में घटिया सामग्री का उपयोग किया गया

ग्रामीणों ने घटिया सामग्री का आरोप लगाते हुए विरोध प्रदर्शन किया।

है, जिसके कारण यह सड़क जगह-जगह से टूट गई है। सड़क क्षतिग्रस्त होने से आमजन को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था, जिसके निर्माण कार्य को लेकर जन प्रतिनिधियों से सड़क का निर्माण कार्य करवाने की गुहार लगाई तो राज्य सरकार की ओर से 71 लाख रुपए स्वीकृत कर सड़क का निर्माण कार्य

- **ग्रामीणों ने बेहतर क्वालिटी से सड़क का निर्माण कार्य करवाने की मांग की**

शुरू करवा दिया, लेकिन सड़क का निर्माण कार्य कर रही ठेका कंपनी निर्धारित मापदंड के अनुसार सड़क का निर्माण कार्य नहीं करने से सड़क बनने के कुछ दिन बाद ही क्षतिग्रस्त होने लगी है। ऐसे में यदि सड़क का निर्माण में बेहतर क्वालिटी का उपयोग नहीं किया गया तो सड़क का निर्माण कार्य बंद करवा दिया जाएगा। इस दौरान ग्रामीणों ने इस सड़क की जांच करवाने और दोबारा से सड़क का निर्माण कार्य करवाने की मांग की है। इस मौके पर रामकिशन काजला, घीसाराम मीणा, राजेंद्र काजला, प्रकाश मेघवाल, कालूराम शर्मा, समदर सिंह चौहान, उम्मेद मेघवाल, समदर सिंह राजपूत सहित अनेक लोग मौजूद थे।

मथुरादास माथुर अस्पताल में ठेके पर लगे कर्मचारियों को तीन माह से वेतन नहीं मिला

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर के मथुरादास माथुर (एम.डी.एम.) अस्पताल में ठेका कंपनी की ओर से ठेके पर लगे कर्मचारियों को वेतन नहीं मिलने से भुखमरी की स्थिति बन गई है। ठेका कर्मचारियों को पिछले तीन माह से वेतन नहीं मिला है। कई बार एमडीएम अस्पताल प्रशासन को बताने के बावजूद कोई सुधार नहीं हुआ तो आखिरकार धरना देना शुरू कर दिया। इसके चलते अस्पताल में इलाज के लिए आने वाले मरीजों को परेशानियों का सामना करना पड़ा।

ठेका कर्मचारी महासंघ राजस्थान के अध्यक्ष तेजपाल ने बताया कि पूर्व में हमने अस्पताल अधीक्षक को ज्ञापन भी दिया था, जिसमें वेतन देने और कर्मचारियों को श्रम विभाग की गाइडलाइन के अनुसार एरियर देने की मांग भी की गई थी। वर्तमान में जनवरी 2023 से दिसंबर 2024 तक बकाया एरियर की राशि 16 हजार से अधिक की है। हमें बार बार वेतन पाने के लिए धरना देना पड़ रहा है। ठेका कंपनी

- **कई बार एमडीएम अस्पताल प्रशासन को बताने के बावजूद कोई सुधार नहीं हुआ तो ठेका कर्मचारियों ने वेतन नहीं मिलने पर धरना देना शुरू किया**
- **वेतन के अभाव में ठेका कर्मचारियों को परिवार चलाना भी मुश्किल हो रहा है**

राजदीप इंटरप्राइजेज कंपनी पर हॉस्पिटल प्रशासन कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है।

जानकारी के अनुसार अस्पताल में ठेका कंपनी राजदीप एंटरप्राइजेज को लेकर लंबे समय से कई बार शिकायतें भी की गई है। यहां पर काम करने वाले कर्मचारियों ने कई बार अस्पताल प्रशासन से इस कंपनी पर कार्रवाई की मांग भी की है।

उन्होंने ज्ञापन में बताया कि ठेका कंपनी की ओर से ना तो कर्मचारियों को समय पर वेतन दिया जा रहा है ना ही उनके बकाया एरियर का भुगतान किया जा रहा है, जबकि वेतन के अभाव में उन्हें परिवार चलाना भी मुश्किल हो रहा है। अस्पताल में लगे ठेका कर्मियों को प्रति माह के हिसाब से करीब सात हजार रुपये का भुगतान किया जाता है।

लेक्चरर के रूप में प्रमोट हुए टीचर्स के काउंसलिंग कार्यक्रम में बदलाव

बीकानेर, (निसं)। राज्य के सरकारी सीनियर सेकंडरी स्कूल में लेक्चरर के रूप में प्रमोट हुए टीचर्स के काउंसलिंग के कार्यक्रम में फेरबदल हो गया है। अब दस जनवरी से माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में काउंसलिग की जाएगी।

शिक्षा निदेशालय ने 19 दिसम्बर को बड़ी संख्या में टीचर्स को लेक्चरर के रूप में प्रमोट किया था। तब इन टीचर्स को यथावत ही कार्यभार ग्रहण करवा दिया गया था लेकिन अब इनकी

- **अब दस जनवरी से होगी काउंसलिंग, सभी रिक्त पद सार्वजनिक नहीं हो रहे**

काउंसलिंग के आधार पर पोस्टिंग होगी। इसके लिए पूर्व में जारी कार्यक्रम को बदलते हुए नया कार्यक्रम तय किया गया है। इसमें दस जनवरी को प्राथमिकता श्रेणी के साक्ष्य एवं आपत्तियों का निस्तारण किया जाएगा। अंतिम रूप से वरीयता सूची का प्रकाशन और रिक्तियों का प्रकाशन किया जाएगा। 11 जनवरी से 16 जनवरी के बीच वरीयता सूची के आधार पर चयन और ऑप्शन लॉक करने का अवसर दिया जाएगा। रात बारह बजे तक चयन और ऑप्शन लॉक करने का अवसर मिलेगा। इसके बाद इसके बाद बीस जनवरी को विकल्प के आधार पर एनआईसी की ओर से शाला दर्पण जयपुर और बीकानेर में रिजल्ट तैयार किया जाएगा। 22 जनवरी को इन टीचर्स के काउंसलिंग रिजल्ट के आधार पर पदस्थापन किया जाएगा। उधर, शिक्षक संगठनों का आरोप है कि सभी स्कूल के रिक्त पद नहीं खोले जा रहे हैं। ऐसे में दूरस्थ विद्यालयों के ही रिक्त पद खोलने से टीचर्स को शहर और शहर के नजदीक के विद्यालय नहीं मिल रहे हैं।

रेलवे स्टेशनों का निरीक्षण किया

कोटा, (निसं)। मंडल रेल प्रबंधक अनिल कालरा ने कोटा-बस्सी बेरीसाल रेल खण्ड का संरक्षा विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। डीआरएम ने विशेष रूप से अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पुनर्विकसित बूंदी एवं मांडलगढ़ स्टेशन के निर्माण कार्यों की समीक्षा की। बूंदी एवं मांडलगढ़ रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास कार्य क्रमशः 7.62 करोड़ एवं 5.47 करोड़ की लागत से तैयार हो चुका है। डीआरएम ने पुनर्विकसित उक्त स्टेशनों पर निर्माण कार्य की गुणवत्ता एवं स्टेशन परिसर पर उपलब्ध यात्री सुविधाओं का निरीक्षण किया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 8 जनवरी, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र सायं 4:30 तक, सिद्ध योग रात्रि 8:23 तक, कौलव करण दिन 2:26 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मेष, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। कुमार योग दिन 2:26 से सायं 4:30 तक रहेगा। आज श्री हरि जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:57 तक, शुभ 11:15 से 12:33 तक, चर 3:09 से 4:27 तक, लाभ 4:27 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:45

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आज नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक परेशानियों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।